असर करके देखा है जाता। प्रदर्शनी के समाचार भी आते है तो मूल बात जो बाप के पहचान की है। उस पर ही पूरा निश्चय नां बिठाने से बाकी जो कुछ समझाते रहते है वो कोई की बुधी मे बैठता मुश्किल है। भल अच्छा-2 कहते है परन्तु बाप की पहचान नही। पहले तो बाप की पहचान हो। बाप के महावाक्य है मुझे याद करो। मै ही पतित पावन हूं। मुझे याद करने से ही तुम पतित से पावन बन जायेंगे। यह है मुख्य बात। तो पहले-2 चाहिये बाप की पहचान2 यह बुधी मे बैठे कि भगवान एक है वो ही पतित पावन है। ज्ञान का सागर सुख का सागर है वो ही ऊंच ते ऊंच है अगर यह निश्चय हो जावे तो फिर और जो भक्ति के जो भी वेद शास्त्र हैअथवा गीता भागवत है सब खण्डन हो जाते है। भगवान तो खुद आकर कहते है कि यह मैने तो नही समझाया है। मेरा ज्ञान तो नही है। शास्त्रों मे है ही भक्ति मार्ग का ज्ञान। मै तो ज्ञान देकर सदगति कर के चला जाता हूं। फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। ज्ञान की प्रालब्ध पूरी होने बाद फिर भक्ति मार्ग शुरू होता है। भक्ति मार्ग के शास्त्र सब खण्डन किये हुये है। जब बाप का निश्चय बैठ जावे तब समझे भगवान वाच्य यह भक्ति मार्ग के शास्त्र है। ज्ञान और भक्ति आधा-2 समय लेते है। भक्ति मे ज्ञान होता नही है। इसलिये यह जो भी शास्त्र है सब भक्ति मार्ग की सामीग्री है। इनमे भगवानोवाच्य है नही। भगवान जब आते है तो आकर अपना परिचय देते है। यह भी जानते है भक्ति से दुर्गति होनी ही है। इनमे सब झूठ ही झूठ है। सच्च है नही। कौन कहते है कि कल्प लाखो वर्षों का है? मै तो कहता हूं कल्प 5000वर्ष का है। मै तो इस मुख से समझा रहा हूं। तो पहले-2 मुख्य बुधी मे पहुचानी है कि भगवान कौन है यह बात जब तक बुधी मे नही बैठी है तब तक बाकी सब समझाना का असर नही रहेगा। सारी मेहनत ही इस बात मे है। बाप आते ही है कब्र से जगाने। शास्त्र आद पढ़ने से तो नही जागेंगे नां। परमपिता परमात्मा है ज्योति स्वरूप। परन्तु तुम बच्चों की आत्मा पतित बनी हुई है जय कारण ही तुम बच्चों की ज्योति उझानी हुई है। तमोप्रधान हो गई है। पहले-2 बाप का परिचय नां देने से फिर तो जो भी मेहनत आद करते है ओपिनियन आद लिखवाते है वो कुछ भी काम का नही रहता है। इसलिये सर्विस होती नही है। निश्चय हो तो बोलकर समझे कि हां ब्रह्मा द्वारा ज्ञान दे रहे है। मनुष्य ब्रह्मा को देख कर कितना मोझते है। क्यो कि बाप की पहचान नही है। यह शास्त्र आद सब भक्ति मार्ग की झूठी सामीग्री है। इसलिये वो झूठ खण्ड हो गया है। तुम बच्चे अभी जानते हो कि भक्ति मार्गअब पास हो गया है। कलियुग मे है भक्ति मार्ग। और अब संगम पर है ज्ञान मार्ग। हम संगम युगी है। राजयोग सीख रहे है। दैवी गुण धारन करते है नई दुनियां के लिये। जो संगम युग मे नही वो दिन प्रति दिन तमोप्रधान बनते ही जाते है। उस तरफ तो तमोप्रधानता बढ़ती जाती है उस तरफ तुम्हारा संगम पूरा होता जाता है। यह समझने की बाते है नां। समझने वाले भी नम्बरवार है नां। बाबा रोज ताकीद करते रहते है कि पहले-2 जब तक एक बाप का परिचय नही होगा तब तक कुछ भी समझ मे बैठेगा नही। निश्चय बुधी विजयन्ति। बच्चों मे तीक-2 करने की आदत बहुत है। बाप को याद करते ही नही। यादकरना बड़ा कठिन है। बाप को याद करना कराना छोड़ कर अपनी अपनी ही तीक-2 सुनाते रहते है। बाप के निश्चय बिना और चित्रों तरफ बढ़ाना ही नही चाहिये। निश्चय ही नही तो कुछ भी समझेंगे नही। अल्फ का ही निश्चय नही तो बाकी बात मे थोथा मारना है। इसलिये ही टाईम वेस्ट बहुत करते है। किसीकी नब्ज को जानते नही है। ओपनिंग करने वाले को भी पहले-2 बाप का परिचयदेना है कि यह है ऊंच ते ऊंच ज्ञान का सागर। बाप यह ज्ञान अभी ही देते है। सतयुग मे इस ज्ञान की दरकार ही नही रहती है। पीछे शुरू होती है भक्ति। इसको कहा जाता है दुर्गति! बाप के लिये ही दुर्गति का आवाज निकलता है। इसलिये बाप कहते है कि जब दुर्गति पूरी अर्थात मेरी निन्दा

*** ************************** ** ******* ****

पूरी होने का समय होता है तो मै आता हूं। आधा कल्प उनको निन्दा करनी ही है। जिनकी भी पूजा

पूजा करते उनके ही आक्यूपेशन का पता ही नही। तुम बच्चे बैठ समझाते हो। खुद का है मा आऊ
बाबा से योग नही तो दूसरो को ही क्या समझावेंगे। भल शिव बाबा कहते है परन्तु योग मे रहते नही है।
तो विकर्म भी विनाश नही होते है। धारना नही होती है। मुख्य बात ही है एक बाप को याद करना।
बाकी टीं-टीं कितना भी करे। योग नही तो कोई काम का नही। फिर देह-अभिमानी जरूर होगा।
किस ना किसको तंग करते रहेंगे। बच्चे भाषण आद करते है फिर समझते है कि हम ज्ञानी तू आत्मा है।
बाप कहते है ज्ञानी तू आत्मा तो हो टां टां बहुत करते रहते हो। मै कब कहता हूं कि नही। परन्तु
योग बहुत कम है। योग पर पुरुषार्थ बहुत कम है। बाप कितना समझाते रहते है चार्ट रखो। मुख्य है
ही योग की बात। बच्चों मे ज्ञान की टीं-टी बहुत है। योग नही है तो बाकी तीक-2 से फायदा नही
होता है। योगबिना विकर्म विनाश नही होंगे। योग मे तो बहुत बच्चे फेल होते है। समझते है 40%याद
मे रहते है परन्तु बाबा कहते है वो 2% है। बाबा खुद कहते है भोजन खाने समय याद मे रहता हूं
फिर भूल जाता हूं। स्नान करता हूं तो भी बाबा को याद करता हूं। भल उनका बच्चा हूं परन्तु याद तो
करना है। फिर भी याद भूल जाता है। समझते हो यह तो नम्बरवन मे जाने वाला है। जरूर ज्ञान और योग
ठीक होगा। फिर भी बाबा कहते है कि योग मे बहुत मेहनत है। ट्रायल करके देखो फिर अनुभव सुनाओ।
समझो दर्जी कपडा सिलाई करते है। देखे बाप की याद मे रहता हूं। बहुत मीठा माशूक है। उनका जितना
याद करेंगे तो हमारे विकर्म विनाश होंगे। हम सतोप्रधान बन जावेंगे। अपने को देखना है हम कितना समय
याद मे रहते है। बाबा को फिर रिजल्ट बतानी चाहिये। योग मे रहने से ही कल्याण होगा। बाकी तीक-2
से कोई कल्याण नही होगा। समझते कुछ भी नही। अल्फ बिगर काम ही कैसे चलेगा? एक अल्फ का पता नही
तो बाकी तो जीरो-2 हो जाता है। अल्फ के साथ जीरो लगाने से फायदा होता है। योग नही तो सारा दिन
समय खराब करते रहते हैं। बाबा को तो तरस पडता है ओफ: यह विचारे क्या पद पावेंगे। तकदीर मे
नही है तो बाप भी क्या करे? बाप तो बार-2 समझाते रहते है कि दैवी गुण अच्छे रखो। बाप की ही
याद मे रहो। बाप से लव भी होगा तब ही श्रीमत चल सकेंगे। प्रजा तो ढेर बननी है। तुम यहां आये
ही हो यह बनने। इसमे मेहनत है। भल स्वर्ग मे भी जावेंगे परन्तु सजाये खाकर पिछाडी मे आकर
कुछ पद पावेंगे। बाबा तो सब बच्चों को जानते है ना। बाप कहते है योगमे बहुत बच्चे है। इसलिये
थोडी ही बात मे रूसते झगडते रहते है देह अभिमान मे आकर। मुख्य बडे-2 बच्चों का यह हाल है।
योग है नही। योग वाले की चलन बडी रायल शानदार होगी। बहुत कम बोलेंगे। यज्ञ सर्विस मे भी रूची
    **** ***** *********** ************** **********
यज्ञ सर्विस मे हड्डियां भी चली जावे। परन्तु बाबा कहते है याद मे जास्तर रहेंगे तो तो बाप से लव होगा।
कोई-2 है जो मुख्य ये बात परही प कहते है कि गीता किसने गाई। कृष्ण का नाम देकर गीता को खण्डन
कर दिया है। इसलिये ही भारत इतना हीन हुआ है। ड्रामा मे यह भी नूंध है। गिरना ही है। गिरते
है भक्ति द्वारा। बाप की बैठ निन्दा करते है। भारत मे जितनी भगवान की निन्दा करते है उतना कोई
दूसरे खण्ड मे नही करते है। बाप कहते है मै आता भी भारत खण्ड मे ही हूं। बाप कहते है मै आता
भी भारत मे ही हूं। आत्मा को आकर ऊंच बनाता हूं। भक्ति मार्ग मे है दुर्गति। परन्तु किसीको भी पता
नही पडता है। ज्ञान ही नही तो समझे भी कैसे कि भक्ति दुर्गति है। किसीको भक्ति दुर्गति भी कहो तो
बिगर पडते। मुख से कहते है सदगति दाता पतित पावन आओ। तो दुर्गति मे है ना। बाप कहते है
सतयुग मे तो विश्व के मालिक थे। सदगतिमे थे। फिर दुर्गति किसने दी? कब से शुरू हुई? भक्ति से।
आधा कल्प लिये सदगति एक सैकिंड मे पाते है। 21जन्मो का वर्सा पा लेते है। फिर बाकी है भक्ति मार्ग।
जब भक्ति मार्ग है तो ज्ञान नही। तो जब भी कोई अच्छा आदमी आवे तो पहले-2 उनको बाप का परिचय
दो। बाप कहते है बच्चे इस ज्ञान से ही तुम्हारी सदगति होगी। फिर दुर्गति कौन करते है? रावण

तुम बच्चे जानते हो यह ड्रामा चल रहा है सैकिण्ड बा सैकिण्ड। यह बुधी में याद रहे तो भी तुम अच्छी रीती स्थिर हो सकते हो। यहां बैठो तो भी बुधी में रहता है कि यह सृष्टी चक्र कैसे जूं की तरह फिरता रहता है। सैकिण्ड बा सैकिण्ड टकटक होती ही रहती है। ड्रामा अनुसार ही सारा पार्ट बज रहा है। एक सैकिण्ड पास हुआ खत्म। रील होता ही जाता है। बहुत धीरे-2 फिरता है। यह है बेहद का ड्रामा। बुढे आद जो है उनकी बुधी में यह बातें बैठ नहीं सकती। ज्ञान भी बैठ नां सके। योग भी नहीं। फिर भी बच्चे तो है। हां सर्विस करने वालों का पद ऊंच। बाकी का कम पद होगा। यह खयाल में पक्का रखो कि यह बेहद का ड्रामा है। सृष्टी का चक्र फिरता रहता है। जैसे रिकार्ड भरा रहता है नां। हमारी आत्मा में भी ऐसे ही रिकार्ड भरा हुआ है। आत्मा है बहुत छोटी से छोटी। इनमें इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। इसको ही कुदरत कहा जाता है। देखने में तो कुछ भीनहीं आता है। यह समझ की बातें है। छोटी बुधी वाले समझ नहीं सकते। इसमें बहुत मूंझते है आत्मा में कैसे पार्ट भरा हुआ है देखने में कहां आता है। यह तो अनादी अविनाशी ड्रामा है नां। हम जो बोलते वो ड्रामा में पार्ट पास होता जाता है। फिर 5000 की बाद रिपीट होगा। ऐसी समझ कोई पास नहीं है। जो बड़े-2 महारथी होंगे वो बार-2 इन बातों पर ध्यान देकर समझाते रहेंगे। तो ही बाप कहते है पहले-2 तो गांठ बधवाओं बेहद के बाप की याद की। बाप कहते है मुझे याद करो। आत्मा को अब घर जाना है। देह के सब सम्बन्ध छोड़ देनी है। जितना हो सके बाप को याद करो। यह पुरुषार्थ है गुप्त। बाप राय देते है जितना हो सके बाप को याद करो। परिचय भी बाप का ही दो। याद कम करते है तो परिचय भी कमदेते है। बाकी तो ठीक-2 है। खेला सारा ही एक बात में है। पहले तो बाप का परिचय बुधी में बैठे फिर कहो अब लिखो कि कौन वो बाप है। देह सहित सब कुछ छोड़ एक बाप को याद करना है। याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। मुक्ति धाम जीवन मुक्ति धाम में तो दुःख होता ही नहीं है। मूल बात ही पहले-2 यह समझानी है। दिन प्रति दिन अच्छी बातें समझाई जाती है। आपस में भी सही बातें करो। लायक भी बनना चाहिये। ब्राह्मण होकर भी बाप की रूहानीसेवानहीं की तो वो बच्चा किस काम का? पढाई की तो अच्छी रीती धारणा करनी चाहिये नां। बाबा जानते है बहुत है जिनको एक अक्षर भी धारना नहीं होती है। यथार्थ रीती बाप को याद करते नहीं। प्रदर्शनी में कितना खर्चा होता है। लिखते है 2,3 हजार आये। फिर उनसे कितने निकले? कहा तो 5,7,10 कहीं फिर एक भी नहीं। बाप का परिचय उनको मिला तो भी शुरु है। समझाने की तरकीब कोई में है नहीं। हां बाकी प्रजा बनती है बाबा कब कहते है कि नहीं। परन्तु राजायें तो मुश्किल ही कोईबनते है नां। एक राजा रानी बाकी हो गई सारी प्रजा। मिट घरेट भी उनके अन्दर हो जाते है नां। सब एक के अन्दर रहते है। यह राजाई का पद पाने में ही मेहनत है। बाकी सब अन्दर में आ जाते है। जो मेहनत करेंगे वो ही ऊंच पद पावेंगे। मेहनत करे तब राजाई में जा सकते है। उनस्वरन को ही स्कालरशिप मिलनी है। यह ल-न स्कालरशिप लिये हुये है नां। फिर भी नम्बरवार। बहुत बड़ा इम्तिहान है नां। स्कालरशिप पाकर ही माला बने हुये है। 8रत्न है नां। 8 फिर 108 फिर 16 हजार होते है। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिये। माला में पिरोने लिये। इसमें अन्तर्मुखता बहुत

****

चाहिये। बाप तो है ही कल्याण कारी। तो कल्याण के लिये ही राय देते है नां। कल्याण तो सबका होना है नां। सारी दुनियां का ही होना है परन्तु नम्बरवार। तुम यहां बाप के पास पढ़ने लिये आये हो। तुम्हारे में भी वो स्टुडन्ट अच्छे है जो पढाई पर ही ध्यान देते है। कोई तो बिलकुल ही ध्यान नहीं देते है। ऐसे भी बहुत समझते है कि जो भाग्य में होगा। पढाई की रेस ही नहीं। तो बच्चों को याद का चार्ट रखना है। हमको अब वापस घर जाना है। ज्ञान तो यहीं ही छोड़ जावेंगे। योग जावेगा। ओम